पाठ - 1
आख़िरत का दिन

الدرس الأول - هندي
اليوم الآخر

ईमान के 6 अरकान में से एक आख़िरत के दिन पर ईमान लाना है। कोई इंसान उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि वह आख़िरत (परलोक) और उससे संबंधित चीज़ों और वहां पेश आने वाले मामलों पर ईमान न ले आए।

आख़िरत के दिन के बारे में जानकारी हासिल करना और उसको कसरत से याद करना बहुत ही अहम है। क्योंकि मानवीय स्वभाव में सुधार, तक़्वा और दीन पर जमे रहने के लिए इसकी महत्वपूर्ण भुमिका है। दिल तभी कठोर होता है और गुनाहों की हिम्मत करता है जबकि हम उस दिन को भूल बैठते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الوِلْدَانَ شِيبًا﴾

"तुम यदि काफिर रहे, तो उस दिन कैसे पनाह पाओगे जिस दिन बच्चों को बूढ़ा कर देगा।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّا أَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكَارَى وَمَا هُمْ بِسُكَارَى وَلَكِنَّ عَذَابَ اللهِ شَدِيدٌ

लोगो, अपने पालनहार से डरो! निस्संदेह कियामत का ज़लज़ला बहुत ही बड़ी चीज़ है। जिस दिन तुम उसे देख लोगे कि हर दूध पिलाने वाली दूध पीते बच्चे को भूल जायेगी और सभी गर्भवती महिलाओं के गर्भ गिर जायेंगे। और तू देखेगा कि लोग मदहोश दिखायी देंगे, यद्यपि वास्तव में वे मतवाले नहीं होंगे। लेकिन अल्लाह का अज़ाब बड़ा ही सख़्त है।

मौत : इस दूनिया में हर ज़िन्दा चीज़ एक दिन समाप्त हो जाती है। इसी समाप्ति का नाम मौत है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ यानी, "हर नफ़्स को मौत का मज़ा चखना है। (सूरह आले इमरान आयत 185) अल्लाह तआला ने और फ़रमाया:

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ यानी, "ज़मीन पर जो हैं सब फ़ना होने वाली हैं।

अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्बोधित करते हुए कहा: إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُمْ مَيِّتُونَ यानी, "यक़ीनन आपको भी मौत आयेगी और यह सब भी मरने वाले हैं। इस दुनिया में कोई भी हमेशा के लिए ज़िन्दा नहीं रहेगा। अल्लाह तआला ने इसी सच्चाई को बयान करते हुए कहा: وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ أَفَإِنْ مِتَّ فَهُمُ الخَالِدُونَ [الأنبياء:٣٤]

यानी, "आप से पहले किसी इंसान को भी हमने हमेशगी नहीं दी। 1. अधिकांष लोग मौत से ग़फ़लत बरतते हैं, हालांकि मौत एक अकाट्य सत्य है जिस में किसी सन्देह की गुंजाइश नहीं है। मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि वह अधिक से अधिक मौत को याद करे। और समय बीतने से पहले अपनी इस दुनिया में नेकी के ज़रिया अपनी आख़िरत (परलोक) का सामान तैयार कर ले। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है:

اغْتَنِمْ خَمْسًا قَبْلَ خَمْسٍ: حَيَاتَكَ قَبْلَ مَوْتِكَ، وَفَرَاغَكَ قَبْلَ شُغْلِكَ، وَغِنَاكَ قَبْلَ فَقْرِكَ، وَشَبَابَكَ قَبْلَ هَرَمِكَ، وَصِحَّتَكَ قَبْلَ سَقَمِكَ

पांच चीज़ों को पांच चीज़ों से पहले ग़नीमत जानो। अपनी ज़िन्दगी को मौत से पहले, अपनी सेहत को बीमारी से पहले, फ़ुर्सत को व्यस्तता से पहले, जवानी को बुढ़ापे से पहले और सम्पन्नता को तंगहाली से पहले। (इसे इमाम अहमद ने रिवायत किया है।)

मुर्दा अपने साथ क़ब्र में दुनिया का साज़ो सामान नहीं ले जाता है। बल्कि उसके साथ उसका अमल रहता है। अतः आदमी को चाहिए कि वह ज़्यादा से ज़्यादा नेक अमल करे ताकि हमेशा की सआदत हासिल कर सके और उसके कारण अज़ाब से छुटकारा पा सके।